Dr. Seema Kumari, Asst. Prof. (Pol. Sc.), RMC VKSU.
Dated - 02.07.2021, BA I. (Subs.)

2. राजनीतिक समानता - का अर्थ है नागरिकों के राजनीतिक अधिकार की समानता। किसी भी व्यक्ति को जन्म, लिंग या धर्म के आधार पर राजनीतिक पद प्राप्त करने से नहीं रोका जायेगा। रा० स० यह भी अभिप्राय है कि निर्णयन संस्थाओं में समानता के आधार पर प्रतिनिधित्व का अधिकार अर्थात एक व्यक्ति एक वोट के नियम का पालन। रा० स० का आरंभ एक प्रगतिशील विचार के रूप में हुआ, जिससे लोकतंत्र की स्थापना में बल मिला। निम्न बातें महत्वपूर्ण है -

1. मतदान का अधिकार
2. चुनाव में उम्मीदवार बनने का अधिकार
3. प्रार्थना पत्र का अधिकार - नागरिक अपनी शिकायतें सरकार तक पहुंचा सके।
4. राजकीय नियुक्तियों तथा सम्मान प्राप्त करने का अधिकार
5. विचारों की अभिव्यक्ति तथा दलीय संगठनों के निर्माण का अधिकार भी सभी व्यक्तियों को समान रूप से प्राप्त होना चाहिए।

3. सामाजिक समानता - अमेरिका में दास प्रथा, नीग्रो समाज के लोगों से भेदभाव, भारत में दलितों आदिवासी से किया गया भेदभाव ये सभी सामाजिक समानता के विरुद्ध हैं। रा० स० के अंतर्गत निम्न बातें आती हैं:-

a] वंश, धर्म, जाति या वर्ण के आधार पर किसी को श्रेष्ठ और हेय न समझा जाए।

Scanned with CamScanner

भारतीय संविधान में अनुच्छेद 17 के तहत अस्पृश्यता को एक दंडनीय अपराध घोषित किया गया है।
b) स्त्रियों को पुरुषों से कम अधिकार नहीं दिए जाएं।
c) मनुष्य मनुष्य के बीच सामाजिक समागम को बढ़ावा मिले।

3. आर्थिक समानता – एच. जे. लास्की के अनुसार 'जिस देश में संपत्ति तथा उत्पादन के साधन कुछ गिने-चुने लोगों के हाथों में केंद्रित होते हैं उस देश की राजनीति, संस्कृति, शिक्षण संस्थाओं तथा न्यायपालिका पर धन पूर्णतया हावी हो जाता है' निम्न तत्व हैं:-
1. सभी व्यक्तियों की न्यूनतम भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए। अब तक सभी व्यक्तियों को भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधाएं प्रदान करना
2. सभी व्यक्तियों को रोजगार पर्याप्त मजदूरी और उचित अवकाश की सुविधा देना।

सामाजिक आर्थिक समानता सबके लिए समान हिस्से की मांग नहीं करती। यह उन विषमताओं की कटौती की मांग करती है जो सामाजिक अन्याय को जन्म देती है। सामाजिक आर्थिक समानता यह मांग करती है कि जीवन को सुखमय, सम्मानपूर्ण, और उन्नत बनाने के साधन निर्धन और वंचित वर्गों को भी सुलभ कराए जाएं। स० मा० स० के विचार से ही आधुनिक राज्य को कल्याणकारी राज्य बनने का मार्ग प्रशस्त किया। बेरोजगारी सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना, वृद्धावस्था पेंशन, आदि समानता को बढ़ावा देते हैं

Scanned with CamScanner